# भक्त गिलहरी

## भवानी कोरुला द्वारा लिखित

श्री मुक्तानन्द आश्रम में वसन्त-ऋतु प्रकृति में उत्सव मनाने का समय होता है, जब पृथ्वी अपनी लम्बी निद्रा से जागकर पुनः नवजीवन की प्रक्रिया आरम्भ कर देती है। आश्रम के मैदानों में चारों तरफ़ जीवन के नए सिरे से आरम्भ होने के चिह्न दिखाई देते हैं। हवा बदली-बदली-सी महसूस होने लगती है; और सूर्य की उष्णता और भी अधिक महसूस होती है। बर्फ़ के पिघलने से मैदानों में उगी हुई हरी-हरी घास और पुष्पों के पल्लवित होने से वातावरण भीनी-भीनी खुशबू से सराबोर होता है। सर्दियों के दौरान जो जीव शीतनिद्रा में छिप गए होते हैं, वे धरती में से अपना सिर बाहर निकालकर इधर-उधर घूमते-फिरते दिखाई देते हैं। सचमुच, वसन्त-ऋतु इन्द्रियों के लिए एक त्यौहार ही है!

सन् २०१५ में वसन्त-ऋतु के आरम्भ में एक दिन मैं आश्रम में उस स्थान को तैयार करने की सेवा कर रही थी जहाँ गुरुमाई जी दर्शन देती हैं। जब भी मैं इस स्थान में प्रवेश करती हूँ, मैं इसकी पवित्रता को महसूस कर पाती हूँ, दशकों से श्रीगुरु और शिष्य के बीच होते आ रहे समस्त अनूठे संवादों की शक्ति को महसूस कर पाती हूँ—वह प्रेम जो जगाया गया, जो पूजा-अर्चनाएँ सम्पन्न हुईं और जो जीवन रूपान्तरित हुए, यह सब मैं महसूस करती हूँ। मैं श्रीगुरुमाई के प्रति कृतज्ञता के भाव से भी भर जाती हूँ, उनके दर्शन के लिए, उनकी सिखावनियों, उनकी कृपा के लिए—इस जगत में उनकी उपस्थिति के लिए।

उस दिन अपने सेवाकार्य को आरम्भ करने से पहले मैंने पल भर के लिए बाहर के परिदृष्य को निहारा। दर्शन-स्थान के चारों किनारों पर बड़ी-बड़ी, विशाल-सी खिड़कियाँ हैं, जिससे आपको अन्दर होने पर भी ऐसा लगता है कि आप बाहर प्रकृति के बीच हैं। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि, चूँकि अन्दर और बाहर के स्थान को अलग करने के लिए ये खिड़कियाँ यहाँ हैं, इसलिए पशु-पक्षी आपकी आँखों के सामने विचरने में स्वतन्त्रता महसूस करते हैं!

बाहर देखकर मुझे लगा कि *बाहर कितना कुछ है जो जीवन से भरपूर है, जो आश्चर्य से भर देता है।* मैं पेड़ों पर खिल रही लाल कलियों, चारों ओर उड़ते परिन्दों और इधर-उधर मँडराती गिलहरियों को देखने का आनन्द लेने लगी।

मैंने उस स्थान को पूरी तरह तैयार कर लिया और दर्शन के लिए लोग अपने-अपने स्थान पर बैठ गए। तत्पश्चात् वहाँ श्रीगुरुमाई का आगमन हुआ। जैसा कि वे यहाँ प्रवेश करने पर अकसर किया करती हैं, वे खिड़कियों के पास थोड़ा रुकीं; बाहर देखते हुए उन्होंने प्रकृति के विस्मयों की सराहना की।

क्षणभर बाद उन्होंने कहा, "देखो! देखो कौन आया है यहाँ।"

मैंने गुरुमाई जी के इशारे की ओर देखा और देखकर आश्चर्यचकित रह गई। वहाँ, खिड़की के ठीक बाहर, एक *प्यारी-सी,* नन्हीं-सी गिलहरी खड़ी थी और वह अन्दर की ओर झाँक रही थी।

मैंने कहा, "कुछ मिनट पहले जब मैं यहाँ तैयारी कर रही थी तब तक तो यह यहाँ नहीं थी। गुरुमाई जी, यह अवश्य ही आपके दर्शन करने आई होगी।"

जब दर्शन चल रहा था, मेरी सेवा यह थी कि मैं सुनिश्चित करूँ कि सभी के पास उनकी ज़रूरत का सारा सामान है तथा किसी भी चीज़ की आवश्यकता पड़ने पर उसकी देखरेख करूँ या उसे पूरा करूँ। बीच-बीच में मैं बाहर झाँकती, यह सोचकर कि अगर किसी और चीज़ ने गिलहरी का ध्यान आकृष्ट कर लिया हो तो कहीं वह गिलहरी वहाँ से भाग तो नहीं गई। पर मैंने जब भी मुड़कर देखा तो पाया कि गिलहरी वहीं है! वह क्या कर रही होगी?

पल भर के लिए मेरे मन में विचार आया, *हे भगवान! वह तो गुरुमाई जी को निहार रही है!*

और, क्या आप इस पर विश्वास करेंगे? वह इसी तरह बहुत देर तक रुकी रही—जी हाँ *बहुत* लम्बे समय तक!

अगले दिन, जब गुरुमाई जी उसी स्थान पर दर्शन देने के लिए आईं, उन खिड़कियों के पास फिर से एक गिलहरी बैठी थी। *क्या यह कल वाली गिलहरी की बहन होगी?* मैंने आश्चर्य से सोचा। उससे अगले दिन, एक तीसरी गिलहरी आ गई *[क्या उसकी एक और बहन भी है?!]* और उसके बाद चौथी, पाँचवीं और एक छठी गिलहरी भी आई—ऐसा लग रहा था मानो गिलहरियों का पूरा परिवार ही गुरुमाई जी के दर्शन करने के लिए उत्सुक है। उनमें से हर एक गिलहरी वहाँ आती तो अकेले ही थी, परन्तु सभी का हाव-भाव और व्यवहार एक-सा ही था। जैसे ही गुरुमाई जी वहाँ आतीं, तो वहाँ आई हुई गिलहरी दौड़कर खिड़की के पास आ जाती और जब गुरुमाई जी दर्शन दे रही होतीं तो वह झाँककर उनकी ओर देखती। वह कुछ देर वहाँ खड़ी रहती और फिर जब तक दर्शन चलता, तब खिड़कियों और बगीचे के बीच की जगह में आगे-पीछे दौड़ती-भागती रहती।

ऐसा कुछ दिन चलता रहा; फिर एक दिन गुरुमाई जी ने देखा कि खिड़की के पास सबसे आख़िर में जो गिलहरी आई थी, उसकी पूँछ विशेषरूप से छोटी थी—वस्तुतः एक आम गिलहरी से काफ़ी छोटी। उसके बाद वह छोटी पूँछ वाली गिलहरी हमें बार-बार दिखने लगी, और जल्द ही मैं यह जान गई कि वहाँ खिड़की के पास *अलग-अलग* गिलहरियाँ नहीं, बल्कि एक ही गिलहरी लगातार आती रही थी—वही छोटी पूँछ वाली गिलहरी!

तब से, यह गिलहरी [या "शॉर्ट टेल," गुरुमाई जी उसे इसी नाम से बुलातीं; "शॉर्ट टेल" का अर्थ है "छोटी पूँछ"] आश्रम के इस विशिष्ट क्षेत्र में प्रमुख हिस्सा बन गई। पूरे ग्रीष्म के दौरान और फिर, पतझड़ में भी वह नियमित तौर पर वहाँ आती रही—जी हाँ, केवल तब, जब गुरुमाई जी उस स्थान में आतीं। वह अगली वसन्त-ऋतु में भी हमें दिखी और हर साल जब गर्मियों का मौसम आता तो उसने लौट आने की अपनी आदत ही बना ली।

हालाँकि मैंने इस बारे में कई किस्से सुने हैं कि कैसे कुछ लोग गिलहरियों को पालकर उनके साथ एक रिश्ता क़ायम कर लेते हैं, पर मैंने कभी किसी गिलहरी को किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति इस प्रकार अपनापन व्यक्त करते नहीं देखा था जिसने अब तक उससे कोई रिश्ता न बनाया हो। जिस प्रकार वह बिलकुल नियमित रूप से गुरुमाई जी को देखने, उनके दर्शन करने आती थी, उसे देख मैं आश्चर्यचकित थी। जो मैं देख रही थी, उस पर शुरू में तो मुझे सन्देह हुआ और मैं मन ही मन सोचती, *यह अवश्य ही कोई संयोग है। इस गिलहरी को कैसे पता हो सकता है कि गुरुमाई जी कौन हैं?*

जब भी मैं उस स्थान की साफ़-सफ़ाई कर रही होती या फिर उसे दर्शन के लिए तैयार कर रही होती, मैं उस गिलहरी पर नज़र रखने लगी; मैं ध्यान से देखती कि वह बगीचे में है या खिड़की के पास वाली अपनी जगह पर खड़ी है। पर वह तो सिर्फ़ तभी दिखती जब गुरुमाई जी वहाँ होतीं। आख़िरकार मैं समझ गई कि वह गिलहरी भलीभाँति यह जानती थी कि वह क्या कर रही है। वह तो गुरुमाई जी की पूजा करने और उनके दर्शन करने के लिए वहाँ आती थी!

एक दिन, मैंने गुरुमाई जी के समक्ष, उस गिलहरी के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। मैंने बड़ी प्रसन्नता के साथ कहा, "गुरुमाई जी, वह सचमुच आपके दर्शन करने *ही* आती है!" वे मेरी ओर देखकर प्यार से मुस्कराईं जैसे उन्हें सब पता हो।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, उस गिलहरी का व्यवहार और अधिक भक्तिमय होता गया, उसकी पूजा-अर्चना बढ़ती गई। या तो ऐसा ही था या फिर हो सकता है कि मुझे ही उसका बढ़ता भक्तिभाव नज़र आने लगा था! जब वह वहाँ आ जाती तो खाने-खेलने अथवा अपने भोजन को ज़मीन में दबाकर रखने से पहले जो सबसे पहला वह काम करती, वह था, दर्शन के लिए आना। अकसर वह अपने पिछले पैरों पर बैठ जाती और अपने पंजों को जोड़कर अपने सीने के पास ले आती; उसकी यह मुद्रा प्रणाम करने जैसी प्रतीत होती। वह गुरुमाई जी को भेंट भी अर्पित करती—खिड़की के पास एक फली रखती, अथवा डैन्डीलायन का पुष्प या ऐसा ही अन्य कोई भी फूल जो उसे वहाँ मिल जाता।

शायद इस गिलहरी की पूजा-अर्चना करने की सबसे यादगार घटना सन् २०१७ में, जुलाई यानी गुरुपूर्णिमा के माह के अन्त में घटी थी।

वह मध्य ग्रीष्म की एक ख़ूबसूरत सुबह थी। सूर्य प्रखरता से चमक रहा था और वृक्षों व झाड़ियों पर छाया हरा रंग अपने चरम पर था। वसन्त-ऋतु के फूल खिलना बन्द हो गए थे और अब मौक़ा था गर्मियों के फूलों के पास अपनी चमक बिखेरने का।

दर्शन-स्थान के ठीक बाहर एक क्यारी में पैन्ज़ी के फूल लगाए गए थे। ग्रीष्म-ऋतु के चरम पर, पेड़ों की हरियाली और भूरे रंग से ढकी धरती के विपरीत, ये चटकीले नीले-बैंगनी रंग के फूल आँखों को आकर्षित करने वाले थे। शॉर्ट टेल को फूलों की इस क्यारी में खेलने में मज़ा आता था, ख़ासकर इसलिए कि जब गुरुमाई जी वहाँ विराजमान हों, तब इस जगह से वह उन्हें अच्छी तरह देख सकती थी।

जुलाई माह के लगभग अन्त में यानी जब श्रीगुरु की पूजा-अर्चना को समर्पित यह महीना अपने समापन की ओर था, तब एक दिन श्रीगुरुमाई दर्शन दे रही थीं। एक समय पर गुरुमाई जी ने मुड़कर खिड़की से बाहर देखा कि वहाँ क्या चल रहा है।

गुरुमाई जी मुस्कराईं। मुझे उस क्षण सहसा उनकी आँखों की एक झलक मिली; उनकी आँखों में ऐसी मृदुलता थी जिसका वर्णन करना कठिन है।

मैं खिड़की के और नज़दीक गई, ताकि और अच्छी तरह देख सकूँ कि गुरुमाई जी क्या देख रही हैं। शॉर्ट टेल पैन्ज़ी की क्यारी के बिलकुल पास खड़ी थी और एकटक अन्दर दर्शन-स्थान की ओर देख रही थी।

कितना प्यारा दृश्य था वह! पर, यह वह बात नहीं थी जिसने इस अवसर को इतना अनूठा बना दिया था। नहीं, वह अनूठी बात तो यह थी कि उस गिलहरी ने पैन्ज़ी की एक नाज़ुक-सी डण्डी को अपने

नन्हें-से पंजे में थामे रखा था। फूल को ज़मीन से तोड़े बिना वह उसे हाथ में लिए हुए गुरुमाई जी की ओर देखकर अर्पित कर रही थी।

थोड़ी देर तक वह उसी स्थिति में खड़ी रही—अपने पंजे और फूल को आगे की ओर बढ़ाए हुए। स्पष्ट ही था कि वह यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि गुरुमाई जी के प्रति अर्पित उसकी इस पूजा को गुरुमाई जी देख लें। उसकी एकाग्रता, उसकी विनम्रता और श्रीगुरुमाई के प्रति उसका प्रेम—ये सभी उसके इस कार्य में स्पष्टरूप से झलक रहे थे। गुरुमाई जी ने भी उसे देखा, उनके मुख पर अब भी अत्यन्त सुकोमल भाव थे।

काफ़ी देर तक गुरुमाई जी उसे इसी तरह निहारती रहीं, ताकि उसे विश्वास हो जाए कि उन्होंने उसका उपहार स्वीकार कर लिया है।

शॉर्ट टेल वर्ष-दर-वर्ष आश्रम आती रही। हर बार उसे देखकर और गुरुमाई जी व उसके बीच हो रहे परस्पर प्रेमल संवाद की अनुभूति करने का अवसर पाकर, मुझे गिलहरियों और उनकी आदतों के बारे में और अधिक जानने की इच्छा हुई। मैंने पढ़ा कि जिस क्षेत्र में श्री मुक्तानन्द आश्रम स्थित है, वहाँ गिलहरियाँ आमतौर पर, अधिक से अधिक दो या तीन वर्ष तक ही जीती हैं। इस बात ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया क्योंकि शॉर्ट टेल तो गुरुमाई जी के दर्शन करने कम से कम छः वर्षों तक वहाँ आती रही थी!

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।